100

एंस.एफ.आर.आई. बुलेटिन क्र. 43

मध्य-प्रदेश में भिलावा का सामाजिक-आर्थिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. जी.एस.मिश्रा
डॉ. के.पी. तिवारी

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.)
2000

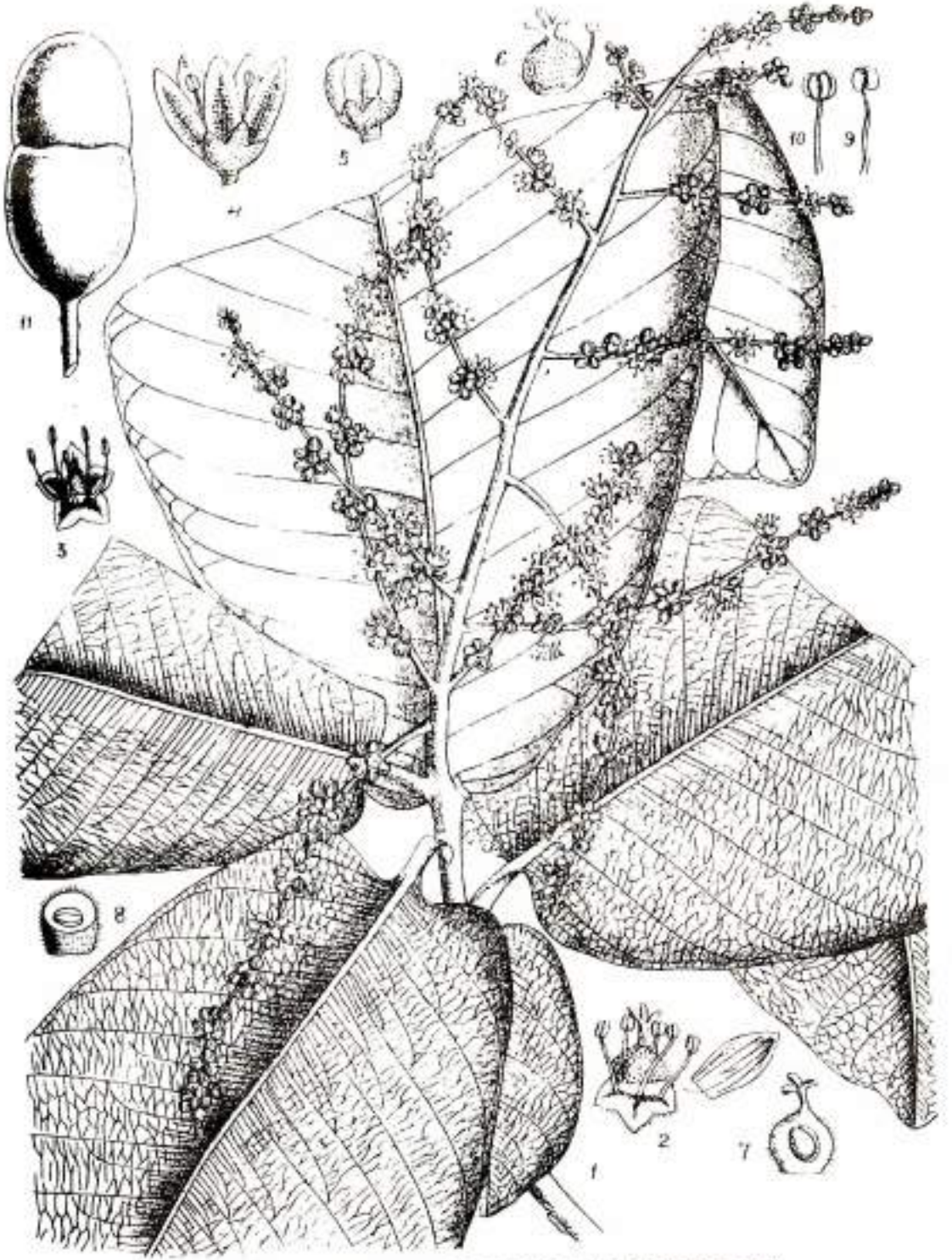

BHILAWA **(SEMECARPUS ANACARDIUM)**

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण		पृष्ठ संख्या
अध्याय 1.	**भिलावा का परिचयात्मक विश्लेषण**		**1–23**
	1.1	रासायनिक गुण	
	1.2	अन्वेषण के उद्देश्य	
	1.3	महत्व एवं उपयोगिता	
	1.4	उत्पादन	
	1.5	संग्रहण एवं प्राप्ति	
	1.6	वर्तमान विपणन प्रक्रिया एवं वितरण श्रृंखला	
	1.7	श्रेणीकरण	
	1.8	विकास प्रक्रिया	
	1.9	वितरण श्रृंखला	
	1.10	विपणन व्यवस्था एवं कीमत	
	1.11	पर्यावरण संबंधी कारक	
	1.12	सामाजिक आर्थिक कारक	
	1.13	वर्तमान स्थिति एवं भावी संभावना	
	1.14	उपयोग	
	1.15	संबंधित रोग एवं उपचार	
अध्याय 2.	**शोध–प्रविधि**		**24–27**
अध्याय 3.	**अध्ययन क्षेत्र का विवरण**		**28–36**
	3.1	भौमिकी	
	3.2	जलवायु	
	3.3	वर्षा	
	3.4	वनों की वैधानिक स्थिति एवं वन संपदा	
	3.5	व्यवसाय एवं व्यावसायिक केन्द्र	
अध्याय 4.	**भिलावा से संबंधित प्राप्त परिणामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन**		**37–56**
	4.1	मध्यप्रदेश में भिलावा बीज का उत्पादन एवं संग्रहण	
	4.2	सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण	
	4.3	कीमत व विपणन प्रक्रिया का अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण	
	4.4	आय एवं रोजगार	
	4.5	श्रेणीयन	
अध्याय 5.	**निष्कर्ष एवं सुझाव**		**57–61**
	5.1	निष्कर्ष	
	5.2	सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण के निष्कर्ष	
	5.3	ट्रेडर्स की समस्या एवं सुझाव	
	5.4	वनोपज संग्रहणकर्त्ता आदिवासियों के सुझाव	
परिशिष्ट			**62–71**
	म.प्र. के प्रमुख भिलावा व्यापारियों की सूची		72
	विकास प्रक्रिया में संलग्न व्यापारियों (अकोला, महाराष्ट्र) की सूची		73–74
	बिबलियोग्राफी		

तालिका सूची

क्र.	विवरण	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भिलावा बीज की विकास प्रक्रिया द्वारा आय/लाभ	अध्याय 1	14
2.	विकास प्रक्रिया द्वारा प्रति व्यक्ति औसत आय	,,	15
3.	वर्षा का विवरण	अध्याय 3	30
4.	गरीबी रेखा के नीचे परिवारों की स्थिति	अध्याय 3	33
5.	अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक क्षेत्रफल एवं जनसंख्या	,,	34
6.	भौगोलिक विवरण	,,	34
7.	कार्यशील एवं अकार्यशील जनसंख्या	,,	35
8.	कुलजनसंख्या में अनु. जाति/जनजाति	,,	36
9.	जिलेवार भिलावा संग्रहण की स्थिति	अध्याय 4	37
10.	प्रमुख भिलावा मंडी एवं औसत क्रय दर	,,	38
11.	छिन्दवाडा एवं बैतूल लघु वनोपज मंडी में दरें	,,	39
12.	अकोला, महाराष्ट्र में भिलावा गिरी की दरें	,,	40
13.	आयु समूह एवं परिवार का आकार	,,	41
14.	परिवार का आकार	,,	41
15.	शिक्षा का स्तर	,,	42
16.	भूमि वितरण का स्वरूप	,,	44
17.	व्यवसाय का स्वरूप	,,	45
18.	भिलावा संग्रहण विधि	,,	46
19.	भिलावा संग्रहण में पारिवारिक भागीदारी	,,	46
20.	भिलावा संग्रहण की स्त्रोतवार निर्भरता	,,	47
21.	विभिन्न चरणों की विपणन प्रक्रिया एवं कीमतें	,,	48
22.	प्रति परिवार औसत संग्रहण, स्थानीय विपणन दर	,,	50
23.	विपणन माध्यम	,,	51
24.	संग्रहण पश्चात् विपणन अवधि	,,	52
25.	रोजगार का स्वरूप	,,	53
26.	उपयोग सूचक समंक	,,	54
27.	औसत संग्रहण में उपयोग का प्रतिशत	,,	55

प्रस्तावना

प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण मध्यप्रदेश जिसके कुल क्षेत्रफल का ३०.५ प्रतिशत भू-भाग वनावरण से आच्छादित है, जो अपनी गोद में करोड़ों की सम्पदा समाहित किये हुए है। वन सम्पदा में लघु वनोपज एवं जड़ी बूटियों की भूमिका दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। विदेशों में इसके प्रति बढ़ता आकर्षण एवं मांग से बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त करने का अच्छा स्त्रोत बनता जा रहा है। दुखद पहलू यह है कि इन जड़ी-बूटियों एवं वनोपज के सबसे समीप रहने वाले उसके लाभ के वास्तविक हकदार लाख प्रयत्नों के बवजूद भी शोषण से नहीं बच पा रहे हैं। जंगल-जंगल नंगे-भूखे भटक कर वनोपज एकत्र कर बाजार तक पहुंचाने के बावजूद भी दो वक्त का भोजन एवं तन के लिये वस्त्र जुटाने में कामयाब नहीं हो पाते। जबकि अपनी गद्दी पर बैठे व्यवसायी रातों-रात लक्षपती बन जाते हैं। यहां इसका कारण बताने की आवश्यकता नहीं समझता, क्योंकि हर व्यक्ति व समाज इससे भली-भांति परिचित है।

लघु वनोपज के बारे में एक चिंता जो आज समाज के बुद्धिजीवियों को उद्वेलित किये जा रही है, वह इसकी अस्मिता व अस्तित्व को लेकर है। प्रदेश सरकार ने अराष्ट्रीयकृत लघु वनोपज संग्रहण को नैसर्गिक अधिकार मानते हुए आदिवासियों/वनवासियों के हितार्थ खुली छूट दी हुई है। लेकिन इस छूट के दूरगामी परिणाम कितने घातक हो सकते हैं कहा नहीं जा सकता। अभाव और निर्धनता ने जिस निर्ममतापूर्वक इसके विदोहन के लिये प्रेरित किया है उसे यदि समय रहते न रोका गया तो समाज का बहुसंख्यक समुदाय मूल्यवान बहु उपयोगी औषधियों से वंचित हो जाएगा।

लघु वनोपज के असमय व अंधाधुंध विदोहन व विपणन से एक तो कीमत कम मिलती है दूसरी ओर जैवविविधता एवं पुनरुत्पादन प्रभावित होता है। दिन प्रतिदिन क्षेत्र विशेष से कोई न कोई वनोपज विलुप्त होती जा रही है। बढ़ती जनसंख्या का वनोपज एवं वनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। मानव का व्यवसायिक दृष्टिकोण कम मूल्यवान वनोपज को महत्वहीन व बेकार समझ नष्ट कर, उसके स्थान पर अधिक आय प्रदान करने वाले विकल्प पर जोर दे रहा है।

मानव की मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाना समय की मांग है, लेकिन अविवेकपूर्ण लिया गया निर्णय एवं विनाश के रास्ते पर चलकर सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती। व्यावसायिक दृष्टिकोण सफल हो सकता है यदि विनाश का रास्ता त्याग कर विकास प्रक्रिया द्वारा उन्नत तकनीक एवं ज्ञान का प्रयोग कर सीमित साधनों का मूल्य संवर्द्धन किया जावे।

प्रदेश के कई पहुंच विहीन जंगली क्षेत्रों में निवास करने वाली जनसंख्या के भरण पोषण का साधन इन्हीं वनो द्वारा पूरा होता चला आ रहा है। लेकिन विकास की अंधी दौड़ में कई क्षेत्रों से वनों का सफाया कर वन भूमि को कृषि भूमि में तब्दील करने का असफल प्रयास किया जा रहा है। वन भूमि मुख्यतः पथरीली व अनुपजाऊ तथा कृषि कार्य के लिये बिलकुल ही अनुपयुक्त होती है। लंबे समय तक खाली पड़े रहने के कारण कुछ समय तक सीमित लाभ प्राप्त किया जा सकता है, वह भी यदि प्रकृति

अनुकूल हुई तो अन्यथा दीर्घकाल में सिवाय नुकसान के और कुछ नहीं प्राप्त हो सकता। ऐसी स्थिति में यदि उस भूमि पर लघु वनोपज का उत्पादन किया जाता तो शून्य लागत पर निश्चित आय भी प्राप्त होती रहती और पर्यावरण भी स्वच्छ बना रहता।

बढ़ती जनसंख्या का दबाव लघु वनोपज के संग्रहण पर बढ़ता जा रहा है। यही कारण है कि समय से पूर्व ही अनुचित तरीके से अधिक से अधिक मात्रा में एकत्र करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। कम समय में अधिक लाभ प्राप्त करने की लालसा आदिवासियों/वनवासियों की चिंता व हताशा को इंगित करती है। सीमित साधनों से असीमित आवश्यकताओं को नहीं पूरा किया जा सकता, अपितु कुछ वरीयता वाली आवश्यकताओं को संतुष्ट किया जा सकता है बशर्ते लघु वनोपज की प्रचलित संग्रहण एवं विपणन पद्धति में सुधार लाने का प्रयास किया जाये। इसके लिये आवश्यक होगा कि वनोपज के महत्व एवं मूल्यों के प्रति वनवासियों में जागरूकता लाकर उन्हें वनोपज के संरक्षण एवं परिवर्धन की जिम्मेदारी का अहसास दिला उनकी मूलभूत समस्याओं का निदान कर लघु वनोपज के संग्रहण, विपणन, विकास प्राक्रिया के बारे में प्रशिक्षित कर बाजार व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जाय। इस कार्य को सरकार, स्वयंसेवी संस्थायें एवं निजी क्षेत्र के व्यवसायी मिलकर पूरा कर सकते है। आज आवश्यकता है' वनोपज की विकास प्रक्रिया, श्रेणीकरण एवं मूल्य संवर्द्धन प्रक्रिया को स्थानीय स्तर पर पूर्ण कर विपणन के लिए प्रस्तुत किया जाये, ताकि उचित लाभ पात्र व्यक्ति को प्राप्त हो।

औषधीय गुण वाली लघु वनोपज के मूल्य एवं महत्व से आम नागरिकों को परिचित करा कर इसके संरक्षण, संवर्द्धन एवं उपयोग को बढ़ाया जा सकता है। इससे जहां एक ओर साधारण रोग के निदान में उसके आय का एक बड़ा हिस्सा खर्च होने से बचेगा, वहीं दूसरी ओर बेकार की वनस्पति समझ कर जिन्हें वह नष्ट कर रहा है उसके संरक्षण के लिए प्रोत्साहित होगा। वनोपज का स्थानीय स्तर पर उपयोग बढ़ने से इसके संग्रहणकर्ता गरीब आदिवासियों को भी उचित कीमत प्राप्त होने लगेगी और उनकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

ऐसा ही प्रयास इस अन्वेषण के माध्यम से किया गया है, कि कम महत्वपूर्ण समझी जाने वाली लेकिन औषधीय गुणों से युक्त लघु वनोपज झिलावा जिसका वैज्ञानिक नाम 'सेमीकार्पस एनाकार्डियम' है। इस वनोपज को लेकर आम नागरिकों में तरह-तरह की धारणाएं हैं, जो एक पक्षीय अर्थात् इसके हानिकारक प्रभाव को लेकर है। इसके गुण, उपयोग विधि एवं संतुलित मात्रा के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है।

मध्यप्रदेश में इसके कुल संग्रहण मात्रा के बारे में विश्वसनीय आंकड़े उपलब्ध नहीं है। उत्पादन की अधिकता एवं नगण्य उपयोग के कारण बहुत कम कीमत पर इसका व्यवसाय चल रहा है। जबकि इसी झिलावा का उपयोग महाराष्ट्र के शहरी अंचल से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में घर-घर किया जाता है। इतना ही नहीं मध्य प्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश आदि राज्यों से आने वाला झिलावा भी कम पड़ जाता है।

भिलावा एवं काजू दोनों का एक ही कुल एनाकार्डिएसी है लेकिन जहां काजू विकास प्रक्रिया एवं तकनीकी ज्ञान द्वारा परिमार्जित होकर जन-जन के बीचे अपनी पहचान बना लिया है वहीं भिलावा तकनीकी प्रयोग द्वारा परिमार्जित न होने के कारण उपेक्षित है। भिलावा बीज के प्रयोग द्वारा जो तकलीफ व्यक्ति को पहुंचती है उसी रूप में यदि काजू का प्रयोग हो तो वही प्रतिक्रिया होगी, लेकिन जो रोग भिलावा के प्रयोग से दूर हो जाते हैं, वे काजू के प्रयोग से कतई नहीं हो सकते। अतः भिलावा को काजू से भी अधिक गुण रखते हुए भी अपनी पकड़ आम नागरिक तक बनाने में समय की बाट जोहना पड़ रहा है। अन्वेषण के माध्यम से भिलावा के गुण-दोष, उपयोग, संग्रहण-विपणन, संग्रहण मात्रा, विकास-प्रक्रिया, मूल्य संवर्द्धन, आय एवं रोजगार की संभावना का आंकलन करने का प्रयास किया गया है।

लेखकगण का प्रयास रहा है कि ऐसी उपेक्षित लघु वनोपज के प्रति आम नागरिकों की सहानुभूति जगे, उसके द्वारा अधिक से अधिक लाभ बिना वनस्पति को क्षति पहुंचाए प्राप्त करें तथा वैज्ञानिक एवं उद्योगपति ऐसी वनोपज के प्रति अपने ज्ञान का प्रयोग पर्यावरण, समाज एवं मानव हित में करने के लिए प्रेरित हों।

अन्वेषण पश्चात् प्राप्त परिणामों को 5 अध्यायों में वर्णीकृत कर प्रस्तुत किया गया है, जिसमें **प्रथम** अध्याय भिलावा के परिचयात्मक स्वरूप पर प्रकाश डालता है। जिसमें समाहित सामग्री अब तक भिलावा के संबंध में प्रकाशित सामग्री के निष्कर्ष, बाजार सर्वेक्षण, लघु वनोपज ट्रेडर्स, संग्रहणकर्ता आदिवासियों के बुजुर्ग सदस्यों एवं आयुर्वेदिक वैद्यों से साक्षात्कार एवं चर्चा द्वारा प्राप्त सूचनाओं एवं इन सूचनाओं की पुष्टि के लिये स्वयं द्वारा किये गये परीक्षणों के निष्कर्षों का समावेश है। **द्वितीय** अध्याय में अन्वेषण कार्य की रूपरेखा एवं शोध प्रविधि की चर्चा की गयी है। **तृतीय** अध्याय- अध्ययन के लिए चयनित क्षेत्र की संरचना एवं स्वरूप के बारे में प्रकाश डालता है। **चतुर्थ** अध्याय में अन्वेषण के पश्चात् प्राप्त परिणामों, वांछित प्राप्तियों एवं भिलावा वनोपज के संग्राहकों से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त सूचनाओं पर प्रकाश डाला गया है। **पंचम** अध्याय में निष्कर्ष तथा अध्ययन के दौरान इस व्यवसाय से जुड़े लोगों की समस्याओं एवं सुझावों की चर्चा करते हुए कुछ महत्वपूर्ण सुझावों की आवश्कता महसूस करते हुए स्वयं के विचार प्रकट किये गये हैं।

अंत में इस अन्वेषण के लिए लघु वनोपज के समस्त ट्रेडर्स एवं आदिवासी समुदाय जो कि भिलावा एकत्र करते हैं या उसके बारे में जानकारी रखते हैं, इस अन्वेषण कार्य के लिए अपना अमूल्य समय व जानकारी प्रदान करते हुए सहयोग प्रदान किया वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इनमें प्रमुख रूप से श्री खेमचंद संचेती (गांधीगंज छिंदवाड़ा), श्री निरंजन लाल अग्रवाल (पेन्ड्रा), अतुल जैन (बैतूल), श्री घनश्याम दास वरसैया (कटनी), विजय सेठ (अमरवाड़ा), श्री चंदेरिया जी (बिलासपुर), श्री शेखर संचेती (मालेगांव, महाराष्ट्र), अम्बिका केमिकल्स परताप गवली (अमानी, महाराष्ट्र), श्री विलायत जागीरदार वासिम (महाराष्ट्र), आदि उल्लेखनीय सहयोग के लिये धन्यवाद के पात्र हैं।

डॉ. जी.एस. मिश्रा
डॉ. के.पी. तिवारी